वार्तालाप-572, हांसुपुर (उ.प्र.), दिनांक 23.05.08
Disc.CD No.572, Hansupur (U.P.), dated 23.05.08
Part-1

समय:-00.03 से 2.04

जिज्ञासु:- बाबा, संगठन को कैसे मजबूत बनाया जाय?

बाबा:- संगठन प्यूरिटी से बनता है। पवित्र दुनियां स्थापन करने के लिए बाप आया हुआ है। पवित्रता में जितनी तराप लगती जावेगी चाहे संकल्पों से, चाहे वाचा से, चाहे वायब्रेशन से, चाहे कर्मेन्द्रियों से जितना अपवित्र बनते जावेंगे उतना संगठन टूटता जावेगा। ये पढ़ाई ही किस बात के लिए है? पवित्रता की पढ़ाई है। अपवित्र को पवित्र बनाने के लिए, पतित को पावन बनाने के लिए बाप आया हुआ है। लिखके देने से कुछ नहीं होता है। खून से लिख करके लोगों ने दिया। अभी तो कागज के स्टैंप पेपर पर लिख करके दे देते हैं। फिर पवित्र दुनियां स्थापन हो जाती है क्या? अंदर से दृढ़ निश्चय अटल विश्वास होना चाहिए, अटल श्रद्धा होनी चाहिए कि बाप हमसे क्या कराना चाहते हैं, और हम क्या कर रहे हैं। बाकी ये गोरख धंधा है। क्या? अपना-2 गऊ रक्ष धंधा बनाने में सब लगे हुये हैं।

Time: 00.03-2.04
Student: Baba, how can we strengthen the *sangathan* (gathering)?
Baba: Gathering is formed through *purity*. The Father has come to establish a pure world. The more the purity degrades, the more you go on becoming impure whether it is through thoughts, through words, through *vibrations*, through *karmendriya*[1], the gathering will go on breaking to that extent. This study itself is for what purpose? This is the study of purity. The Father has come to purify the impure ones, to make the the sinful ones pure. Nothing happens [just] by giving in writing. People wrote with blood and gave. Now they give in writing [just] on a paper; on a *stamp paper*. Then, is a pure world established? There should be firm faith, unshakeable confidence, unshakeable veneration on what the Father wants us to do and [we should check:] what we are doing? As for the rest, this is a *gorakhdhandhaa*. What? Everyone is busy in pursuing his own business of safeguarding the cows.

समय:-2.04 से 6.04

जिज्ञासु:- बाबा, आप बोलते हैं कि भक्ति से दुर्गति होती है। तो आपके गले में स्फटिक का माला और अंगुली में अंगुठी क्यों है?

बाबा:- इस बात का जवाब बाबा देंगे कि बच्चे देंगे?

[1] Parts of the body used to perform action

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दूसरा जिज्ञासु:- बच्चे देंगे।

बाबा:- क्या जवाब देंगे?

दूसरा जिज्ञासु:- बच्चे देंगे जवाब इस बात का।

बाबा:- बच्चे देंगे तो इसका मतलब बाबा लड़ाई करा देंगे बच्चों में। जो पूछने वाले हैं वो भगत हैं, और जवाब देने वाले? ज्ञानी हो गए । क्या जवाब देते हैं?

दूसरा जिज्ञासु:- बाबा, मातायें पहनाती रहती हैं तो बाबा पहन लेते हैं। बाबा अपने से नहीं पहनते हैं।

बाबा:- अच्छा, भक्ति करने के लिए मना नहीं करना चाहिए। माता ने क्या जवाब दिया? एक तो जवाब ये दिया कि अगर कोई भक्ति करता है तो भक्ति करने वाले को मना करना चाहिए? नहीं करना चाहिए। इसलिए कोई ने माला पहना दी तो पहन लेना चाहिए, कोई ने त्रिपुण्ड लगाय दिया तो लगाय लेना चाहिए।

जिज्ञासु:- बाबा, लोग ज्ञान ले लेते हैं कहते हैं हम ज्ञानी हैं, हमें भगवान मिल गये है। लेकिन ये लोग संसारी बंधुओं को याद करते हैं बाबा को भूल जाते हैं।

बाबा:- हाँ।

जिज्ञासु:- ऐसा क्यों?

बाबा:- इसलिए कि गुरुओं में फँसते हैं देहधारियों में। अब पहले एक बात का तो जवाब ले लो। पहली बात का जवाब लिये बगैर ही आगे बढ़ गये। तो माता ने तो ये जवाब दिया कि भक्ति करने के लिये मना नहीं करना चाहिए, इसलिए माला आदि पहन ली जाती है।

Time: 2.04-6.04

Student: Baba, you say that *bhakti* leads to degradation. Then why is a rosary of crystal (*sfatik*) in your neck and a ring on your finger?

Baba: Will Baba reply to this question or will the children reply?

Another student: the children will reply.

Baba: What reply will you give?

Another student: the children will reply to this question.

Baba: 'The children will reply' it means that Baba will make the childre fight among themselves☺. The ones who are asking [the question] are devotees and what the ones who reply? They proved to be knowledgeable. What reply do they give?

Another student: Mothers make him wear, so Baba wears it. Baba does not wear it voluntarily.

Baba: *Acchaa*! You should not stop anyone from doing *bhakti*. What reply did the mother give? One reply that she gave was that if anyone does *bhakti*, then should we stop him from doing *bhakti*? We should not. This is why if anyone makes you wear a rosary you should wear it, if anyone applies a *tripund*[2], then you should let him apply *tripund*.

[2] three horizontal parallel lines drawn on the forehead by the devotees of Shiva

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, people take the knowledge and say: that we are knowledgeable; we have found God. But they remember the worldly relatives and forget Baba.
Baba: Yes.
Student: why is it so?
Baba: It is because they are entangled in *gurus*, in the bodily beings. First take the reply for one question. You have proceeded to the next question without taking the reply for the first question. So, the mother gave a reply that you should not stop anyone from doing *bhakti*, this is why rosary etc. is worn.

जिज्ञासु:- इसका मतलब आप भी भक्ति कर रहे हैं अभी।
बाबा:- नहीं, दूसरे के कहने से अगर भक्ति करते हैं तो कहेंगे आधी भक्ति करते हैं। भक्ति कहा जाता है बिना कारण और कार्य का विश्लेशण किये कोई काम करने लग पड़ना। जैसे कर्मकाण्ड करते हैं। तो कर्मकाण्ड में कारण कार्य का विश्लेशण होता है क्या? मान लो, चोटी ही रखाते हैं तो चोटी रखाने से कुछ फायदा होता है क्या? फायदा तो कुछ भी नहीं होता। रखाते हैं। क्योंकि परम्परा चली आ रही है। अगर ऐसा काम करें जिससे कुछ फायदा हो जाये तो उसे भक्ति कहा जायेगा? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) अरे, ऐसा काम करें, जिससे फायदा हो जाये, नुकसान न हो तो उसे भक्ति कहा जायेगा ज्ञान कहा जायेगा? जानकारी कही जायेगी या अज्ञान कहा जायेगा? जानकारी कही जायेगी। तो ऐसे ही स्फटिक की माला जो है वो शरीर को ठण्डा करती है। बड़े-2 राजायें होते थे वो मालायें पहनते थे किस लिए पहनते थे? राज काज सम्भालने में ढेर सारी मुसीबतें आती हैं, ढेर सारी समस्यायें आती हैं, माथा गरम कर देती हैं। तो वो मालायें पहनते थे। ऐसे ही आज के जमाने में एक बीमारी निकली है उसका नाम है ब्लड प्रेशर। ब्लड प्रेशर बढ़ जाती है तो उसको कन्ट्रोल करने के लिए ठण्डी चीज पहनी जाती है। या तो ताम्बे की चीज पहनी जाती है या तो स्फटिक आदि पहना जाता है। तो इसको भक्ति नहीं कहेंगे। इसको कहेंगे कि ईश्वरीय कार्य न रुके उसके लिए दवाई। दवाई लेना अज्ञान है, भक्ति है या समझ की बात है? (किसी ने कहा- समझ की बात है।) समझ की बात है। जब तक हमारे अंदर इतना योगबल नहीं है तब तक हम दवाई को भी छोड दें, साधनों को भी छोड दें तो हमारा सारा काम रुक जायेगा।

Student: It means that you are also doing *bhakti* now.
Baba: No, if you do *bhakti* on being told by others then it will be said that you do half *bhakti. Bhakti* means to perform any task without analyzing its cause (*kaaran*) and effect (*kaarya*). For example, when people perform rituals (*karmakaand*), then do such rituals involve analysis of cause and effect? Suppose someone keeps a *coti*[3], does keeping a *coti* lead to any benefit? There is no benefit at all. But they keep because it has continued as a tradition. If we perform a task which leads to some benefit, then will it be called *bhakti*? *Arey*, if we perform a task which leads

[3] a lock of hair grown by the upper caste Hindus on the crown of their head

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

to benefit, which does not lead to harm, then will it be called *bhakti* or knowledge? Will it be called knowledge or ignorance? It will be called knowledge. So, similarly, the rosary of crystal cools the body. There used to be big kings; they used to wear rosaries. Why did they used to wear it? They face a lot of difficulties, lot of problems while looking after the affairs of the kingdom which raise the tempers. So, they used to wear rosaries. Similarly, in the present times a disease has emerged; its name is *blood pressure*. When the *blood pressure* increases, then cool things are worn to *control* it. Either things made up of copper are worn or crystal, etc. is worn. So, this will not be called *bhakti*. This will be called a medicine so that the task of God does not stop. Is it ignorance, *bhakti* to consume medicines or is it wisdom? It is wisdom. Until we have enough power of yoga, if we leave even the medicines, if we leave even the facilities, then our entire task will stop.

समय:-6.10 से 7. 06

जिज्ञासु:-बाबा, रामायण में लिखा है स्फटिक शिला बैठे दो भाई।

बाबा:- दानों भाई हैं कौन?

जिज्ञासु:- राम और लक्ष्मण।

बाबा:- राम और लक्ष्मण। जो राम और लक्ष्मण कहे गये हैं वो एक ही शरीरधारी हैं कि दो शरीरधारी हैं?

जिज्ञासु:- शरीरधारी तो दो हैं।

बाबा:- अहं, अभी दो शरीरधारी हैं?

जिज्ञासु:- अभी नहीं हैं।

बाबा:- हाँ तो गायन किस समय का है?

जिज्ञासु:- गायन तो संगमयुग का है।

बाबा:-संगमयुग में भी पुरूषोत्तम संगमयुग का गायन है या सिर्फ संगमयुग का गायन है? (बहुतों ने कहा- पुरूषोत्तम संगमयुग का।) तो वो कब है? अभी है या पहले था? (किसी ने कहा- अभी है।) हाँ तो अभी की बात है। उन्हें ठण्डक लगती होगी। उस शिला पर बैठने से उनको ठण्डक लगती होगी इसलिए बैठे ।

Time: 6.09-7. 06
Student: Baba, it has been written in Ramayana that two brothers are sitting on a crystal rock (*sfatik shila*).
Baba: Who are the two brothers?
Student: Ram and Lakshman.
Baba: Ram and Lakshman. Ram and Lakshman who have been mentioned; are they the one bodily being or two bodily beings?
Student: They are indeed two bodily beings.
Baba: Eh! Are they two bodily beings now?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: They are not that now.
Baba: Yes; so, it is a praise of which time?
Student: The praise is of the Confluence Age.
Baba: Even during the Confluence Age does the glory pertain to the *Purushottam Sangamyug*[4] or to just the Confluence Age? (Many said: the *Purushottam Sangamyug*.) So, when is it? Is it now or was it earlier? (Someone said: it is now.) Yes; so it is about the present time. They must be feeling the coolness. They must be feeling the coolness by sitting on that rock. This is why they sat [on it]. ... (to be continued.)

Part-2

समय:-7.12 से 11.05

जिज्ञासु:- बाबा, एक मुरली में आया है मैं आती ही हूँ घोर रात्री में कोई मुझे पहचानते नहीं, लेकिन जब कृष्ण की जयंती होगी तो घोर सोझरा हो जायेगा।

बाबा:- हाँ, जो बच्चा कृष्ण का जन्म होता है जिसको संगमयुगी कृष्ण कहा जाता है वो अमृतवेले जन्म लेता है या घोर रात्री में जन्म लेता है? अमृतवेले जन्म लेता है। बाप का जन्म पहले रात्री के 12 बजे और बच्चे का जन्म बाद में। जब बच्चे का जन्म होता है तो कहेंगे कि बाप जो है वो बच्चे के द्वारा प्रत्यक्ष होता है। बाप स्वयं अपने आप प्रत्यक्ष नहीं होता। इसलिए कहते हैं सन शोज़ फॉदर, फॉदर शोज़ सन्स। तो बच्चे बाप को प्रत्यक्ष करेंगे, बच्चों में सबसे बड़ा बच्चा कौन है? बच्चा कहा जाता है रचना को, बाप कहा जाता है रचयिता को। तो बाप रचयिता है। कौन है वो बाप रचयिता? संगमयुगी नारायण जो नर से नारायण डैरेक्ट बनता है वो ही है रचयिता। और जो सतयुग में पैदा होने वाला कृष्ण बच्चा है वो क्या हुआ? रचना हुआ ।

Time: 7.12- 11.05
Student: Baba, it has been mentioned in the murli: I come in the complete night. Nobody recognizes Me, but when Krishna is born, then there will be complete brightness.
Baba: Yes, is the child Krishna who is born, the one who is called the Confluence Age Krishna born at *amritvela*[5] or in complete night? He is born at *amritvela*. First the Father is born at midnight and the child is born later. When the child is born, then it will be said that the Father is revealed through the child. The Father is not revealed by Himself. This is why it is said: *son shows father, father shows sons*. So, the children will reveal the Father and who is the eldest child among the children? The creation is called a child; the creator is called a father. So, the father is the creator; who is that father, the creator? The Confluence Age Narayan, who becomes Narayan from a man directly, he himself is the creator. And who is the child Krishna who is going to be born in the Golden Age? He is the creation.

[4] Elevated Confluence Age
[5] Early morning hours

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु:- तो घोर सोझरा बाबा ये सन् 36 की बात होगी। सन् 36 में सतयुग आयेगा ना।
बाबा:- सन 36 में तो प्रत्यक्षता होती ही नहीं। जब बच्चा आत्मा होती है, और वो गर्भ में प्रवेश करती है उसे जन्म लेना नहीं कहा जाता। कब कहा जाता है? गर्भ में प्रवेश होने को जन्म लेना कहा जाता है, प्रत्यक्ष होना कहा जाता है या जब बच्चा बाहर आता है तो जन्म लेना कहा जाता है? (किसीने कहा – जब बाहर आता है।) तो 36 में तो जैसे प्रवेश किया प्रजापिता में। वो गर्भ पिण्ड था। उस पिण्ड में आत्मा, चैतन्यता नहीं थी। चैतन्यता की शुरूवात कब कहें? 76। 76 से पहले निर्जीव गर्भ पिण्ड था। 76 में आत्मा ने प्रवेश किया, बच्चे के द्वारा बाप प्रत्यक्ष होते हैं। तो द्वापरयुगी शुटिंग जब पूरी होती है तो कृष्ण बच्चे का जन्म होता है कारागार में, वो प्रत्यक्षता भी पक्की नहीं है। भारतीय परम्परा में माना जाता है द्विजन्मा ब्राह्मण। पहला जन्म जब बच्चे का होता है तो उसे पक्का ब्राह्मण नहीं कहते। जब यज्ञोपवीत धारण करता है, यज्ञोपवीत संस्कार होता है तो कहते हैं उसका पूरा जन्म हुआ, पक्का ब्राह्मण बन गया। ये तीन सूत्र हैं ज्ञान के तीन सूत्र धारण करना। ब्रह्मा के बारे में, विष्णू के बारे में, शंकर के बारे में तीनों देवताओं के बारे में तीन ज्ञान के सूत्र अच्छी तरह सौ पर्सेंट धारण कर लेना माना संपूर्ण ज्ञानी बन जाना। बाप का पूरा परिचय हुआ मना पक्का ज्ञानी ब्राह्मण बन गया। ये कृष्ण बच्चे की अभी पढ़ाई चल रही है। कब पूरी होगी? (किसी ने कुछ कहा।) हाँ, जब ब्रह्मा के 50 वर्ष पूरे हो जाते हैं 68-69 में शरीर छोड़ा उसमें 50 वर्ष एड कर दिये।

Student: So, [the time of] complete brightness pertains to the year [20]36. The Golden Age will come in the year [20]36, will it not?
Baba: Revelation does not take place in the year [19]36 at all. When a child as a soul enters the womb, it is not said to be birth. When is it said to be birth? Is the entrance in the womb said to be birth, is it called revelation or is it said to be birth when the child comes out? (Someone said: when it comes out.) So, it is as if He entered Prajapita in the year 1936. That was a foetus (*garbh pind*). That foetus [did not have] a soul; it was not alive. When will it be said to become alive? 76. It was a lifeless foetus before 76. The soul entered in 76. The Father is revealed through the child. So, when the Copper Age *shooting* ends, the child Krishna is born in a jail; that revelation is not final either. In the Indian tradition *dwijanmaa* (twice-born) Brahmins are known; when a child is born he is not called a firm Brahmin. When he wears the *yagyopavit* (the sacred thread), when he undergoes the thread ceremony, then it is said that he is born completely; he has become a firm Brahmin. These three threads (*suutra*) means to wear the three threads of knowledge. To wear the three threads of knowledge about the three deities, i.e. Brahma, Vishnu and Shankar properly, hundred percent means to become completely knowledgeable. Someone received the complete introduction of the Father means he beame a firm knowledgeable soul, a Brahmin. This child Krishna is still studying. When will his studies be over? (Someone said something.) Yes, when Brahma's 50 years are over; he left his body in 68-69; 50 years were added to that.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय:-11.15 से 13.10

जिज्ञासु:-बाबा, कहते हैं रोज नित-नई बातें बताते हैं फिर पीछे की मुरली क्यों चलाते हैं?

बाबा:- अच्छा, पीछे की मुरली कौनसी? मुरली किसे कहा जाता है? मुरली कहा जाता है नई बात बताने को। क्या? नई बात बताई जाय उसे कहा जाता है मुरली। पुरानी शास्त्रों की बातें बताई जायें तो उनको कहा जाता है शास्त्र।

जिज्ञासु:-जो आज मुरली चली है वो 68 की है...

बाबा:- आज कोई नई बात नहीं बताई गई?

जिज्ञासु:- तो फिर पुरानी मुरली क्यों चलाई जाती?

बाबा:- पुरानी मुरली नहीं है पुरानी शास्त्र हैं वो। जो कागज का पत्ता लेके पढ़ने वाली सोल है वो कृष्ण बच्चे की है। कृष्ण बच्चा पुराने शास्त्रों के पत्तों को लेकर के पढ़ता है। ये पढ़ाई है, ये स्कूल है। स्कूल में बच्चा किताब लेके पढ़ता है, या टीचर पढ़ता है, या समझाता है?

दूसरा जिज्ञासु:- टीचर अर्थ बताता है।

बाबा:- टीचर अर्थ बताता है। तो यहाँ टीचर कौन है और पढ़ने वाला बच्चा कौन है? कृष्ण बच्चे की आत्मा है पढ़ने वाली। ज्ञान चन्द्रमाँ के रुप में मस्तक पर बैठी हुई है। जो मस्तक पर बैठी हुई है इसलिए उस रुप को कहा जाता है चन्द्रभाल वो है पढ़ने वाला और समझाने वाला कौन है उसका अर्थ? शिव बाप। शंकर वाली आत्मा या राम वाली आत्मा वो समझाने वाली नहीं है। जो नये-2 अर्थ बैठ करके समझाती है वो ही सुप्रीमसोल, सुप्रीम टीचर है। ज्ञान को अधूरा उठाने के कारण ढेर सारे प्रश्न पैदा होते हैं।

Time: 11.15-13.10

Student: Baba, it is said that Baba narrates new topics everyday; then why does He read the past murlis?

Baba: *Acchaa*, what are the past murlis? What is called a murli? Murli means to narrate new things. What? Murli means to narrate new topics. If the old topics of the scriptures are narrated, then it is called a scripture.

Student: The murli that was narrated today is of 68...

Baba: Was nothing new narrated today?

Student: Then why are the old murlis narrated?

Baba: They are not the old murlis, they are the old scriptures. The soul that reads the papers is that of child Krishna. The child Krishna takes the papers of the old scriptures and reads them. This is a study; this is a *school*. In a *school*, does a child read out the book, does the *teacher* read it out or does he explain?

Another student: The teacher explains the meanings.

Baba: The *teacher* explains the meaning. So, who is the *teacher* here and who is the child that studies? The soul of child Krishna is the one who studies. It is sitting on the forehead in the form of the Moon of knowledge (*gyaan chandramaa*). It is sitting on the forehead; this is why that

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

form is called Chandrabhaal[6]; he is the reader and who explains its meaning? The Father Shiva. The soul of Shankar or Ram does not explain. The one who explains the new meanings Himself is the *Supreme Soul*, the *Supreme Teacher*. Numerous questions emerge due to taking the knowledge incompletely.

समय:- 13.18 से 13.51

जिज्ञासु:- बाबा। डफर बुद्धि का मतलब क्या है?

बाबा:- डल बुद्धि। जिनकी बुद्धि चलती ही नहीं। मन, बुद्धि चलायमान होना चाहिए या जड होना चाहिए? चलायमान होना चाहिए। नहीं तो मनुष्य भी नहीं कहा जावेगा। जानवरों की होती है डफर बुद्धि, डल बुद्धि। मनुष्यों की होती है चैतन्य बुद्धि। नहीं तो मनुष्यों और जानवरों में अंतर क्या रहा?

Time: 13.18-13.51
Student: Baba, what is meant by a duffer-intellect?
Baba: Dull-intellect; the ones whose intellect does not work at all. Should the mind and intellect be dynamic or inert? It should be dynamic. Otherwise, he will not be called even a human being. The animals possess a duffer-intellect, a dull-intellect. Human beings have a living intellect. Otherwise what is the difference between human beings and animals?

समय:- 14.01- 16.12

जिज्ञासु:- बाबा, जब शरीर छोड़ती है आत्मा उसी समय भृकुटी के बीच में ध्यान करना है, भृकुटि में देखना है आत्मा को।

बाबा:- जब शरीर छोड़े तब? तब तो याद आ गयी। अगर ये हम लेके बैठेंगे कि जब शरीर छोड़े तब हम भृकुटी के बीच में आत्मा को याद करें तो याद ही नहीं आयेगी। हाँ, प्रैक्टिस करें पहले से। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ जी-2।

Time: 14.01- 16.12
Student: Baba, when a soul leaves its body, at that time it has to concentrate its mind in the *bhrikuti*[7], it has to remember the soul in the *bhrikuti*.
Baba: When it leaves the body? Then you indeed remembered! (Ironically) ☺ If you decide to remember the soul in the *bhrikuti* when you leave the body, then you will not be able to remember at all. Yes, you should *practice* beforehand. (The student said something.) Yes.

जिज्ञासु:- तो हम आत्मा को याद करें कि शिवबाबा जिसमें प्रवेश है उस आत्मा को याद करें?

बाबा:-अगर हम आधार लेकर के याद करेंगे तो जैसे को याद करेंगे वैसे बनेंगे ना।

[6] Having the moon on [one's] forehead; a title of Shiva.
[7] Place between the two eyebrows.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: So, should we remember our soul or should we remember the soul of the one whom Shivbaba has entered?
Baba: If we remember [Him] with the support, then we will become like the one whom we remember, will we not?

जिज्ञासु:- हम आत्मा जो है परमात्मा शिव को याद करेंगे उस ज्योती को याद करेंगे ...
बाबा:- तो अपनी भृकुटी के मध्य में याद करने के लिए बोला, ये शास्त्रों में बोला है या मुरली में बोला है? (किसी ने कुछ कहा।) मुरली में बोला है कि अपनी भृकुटी के बीच में आत्मा को याद करने से हमारी मुक्ति हो जावेगी? (किसी ने कहा- अंतिम टाइम में।) अंतिम टाइम में; ये शास्त्रों में लिखा है। ये मनुष्यों के लिखे हुये शास्त्रों में ये बात लिखी हुई है। गीता में ये बात लिखी हुई है " भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक।" भृकुटी के मध्य में आत्मा प्राण को ध्यान करके हम शरीर छोडेंगे तो हमारी मुक्ति हो जावेगी। लेकिन ऐसा नहीं है। हमें बाप को याद करना है। और बाप हमारी भृकुटी के मध्य में नहीं बैठा हुआ है। बाप कहाँ बैठा हुआ है? बाप सर्वव्यापी होके हरेक की भृकुटी के मध्य में बैठा हुआ है या कोई मुकर्रर रथ में बैठा हुआ है? (बहुतों ने कहा- मुकर्रर रथ में।) तो ये तो उल्टी बात पढ़ ली। आधा शास्त्रों की बातें पढेंगे और आधा मुरली की बातें पकडेंगे तो गड़बड़ हो जायेगा।
जिज्ञासु:-टैली करते हैं शास्त्रों से
बाबा:- शास्त्रों से टैली भी करना है लेकिन ऐसे नहीं कि शास्त्रों की बात को पकड़ के बैठ जाना है।

Student: If we souls remember the Supreme Soul Shiva, if we remember that point of light...
Baba: So, has it been said in the scriptures or in the murlis to remember [the soul] in the *bhrikuti*? (Someone said something.) Has it been said in the murli that we will achieve liberation by remembering the soul in the *bhrikuti*? (Student said: in the last period.) 'In the last period' this has been written in the scriptures. It has been written in the scriptures written by human beings. It has been written in the Gita: '*bhruvormadhye praanmaavesh samyak'*. If we leave the body while remembering the soul in the form of life in the *bhrikuti*, then we will be liberated. But it is not so. We have to remember the Father. And the Father is not sitting in our *bhrikuti*. Where is the Father sitting? Is the Father omnipresent and sitting in the *bhrikuti* or is he sitting in a permanent chariot? (Many said: in a permanent chariot.) So, you have read the wrong thing; if you read half from the scriptures and follow half from the murlis, then it will bring trouble.
Student: We tally [the knowledge] with the scriptures.
Baba: You have to tally [the knowledge] with the scriptures, but you should not stick to the topics of the scriptures. ... (to be continued.)

Part-3

समय:- 16.12 से 17.05
जिज्ञासु:- आँखों से ज्योति निकलती है, लाइट निकलता है, प्रकाश निकलता है...

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा:- आँखों से लाइट और ज्योति तब निकलेगी जब कि हम उस लाइट स्वरुप परंब्रह्म परमात्मा जिसे हम कहते हैं सुप्रीम सोल उसको याद करेंगे, उसका संग करेंगे वो बैटरी है, बैटरी कैसी बैटरी है? बड़ा बैटरा है। जैसे छोटी बैटरी होती है उसका कनेक्शन बड़ी बैटरी से कर दिया जाता है तो वो पावरफुल बन जाती है। हमारी बैटरी तो खाली पड़ी है उसमें से ज्योति निकलेगी कहाँ से?

जिज्ञासु:-हमारा संपर्क हो रहा है ।

बाबा:- संपर्क हो रहा है तो ये बात संपर्क की याद रखें ना। ऐसे नहीं कि भृकुटि के मध्य में हम याद करते रहेंगे तो हमारी सदगति हो जावेगी। हम नर से नारायण बन जावेंगे। नहीं।

जिज्ञासु:- जिस तन में बाप आया हुआ है।

बाबा:-हाँ, ये बात है। ठीक है।

Time: 16.12-17.05
Student: Light emerges from the eyes.
Baba: Light will emerge from the eyes when we remember that form of light *Param Brahm Parmatma*, whom we call the *Supreme Soul* and remain in His company; He is the *battery*; what kind of a *battery* is He? He is a big battery. For example, if a small *battery* is connected to the big *battery*, it becomes *powerful*. Our *battery* is empty. How will light emerge from it?
Student: We are coming in contact with Him.
Baba: When you are coming in contact, then keep in mind about that contact. It is not that you will achieve true salvation if you remember Him in the *bhrikuti*, you will change from a man to Narayan. No.
Student: The body in which the Father has come.
Baba: Yes, this is correct. It is correct.

समय:- 17.11 से 18.05

जिज्ञासु:- बाबा, बुद्धि और ज्ञान में क्या अंतर है?

बाबा:- बुद्धि और मन दोनों की शक्ति को ही आत्मा कहा जाता है। मन, बुद्धि में जो रोशनी आती है वही ज्ञान है। मन, बुद्धि डफर बन गई माना अंधेरा आ गया। सतयुग में हमारी मन, बुद्धि सोने जैसी थी और कलियुग में हमारी बुद्धि पत्थर बन गई। तो पत्थर में रोशनी कहेंगे या पत्थर में अंधेरा कहेंगे? अंधेरा है। वो उजेला कैसे आता है? जबकि आत्मा याद करती है उस बुद्धिमानों की बुद्धि को तो उसमें उजेला आ जाता है।

Time: 17.11-18.05
Student: Baba, what is the difference between the intellect and knowledge?
Baba: The power of intellect and mind itself is called a soul. The light that comes in the mind and intellect itself is knowledge. If the mind and intellect becomes *duffer* (dull), it means that it has become dark. In the Golden Age our mind and intellect was like gold and in the Iron Age our intellect has become like a stone. So, will it be said that there is light or darkness in a stone?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

There is darkness. How does that light emerge? When the soul remembers that intellect of the intelligent ones, then the light comes in it.

समय:-18.20 से 18.59

जिज्ञासु:- बाबा, बुद्धि को कितना भी ज्ञान सिखाया जाय, कितना भी पढ़ाया जाय रातों दिन पढ़ाया जाय तब भी जगह खाली रहती है।

बाबा:-अच्छा, तो मुरली में जो बात आती है मैं तुम बच्चों की बुद्धि को भरपूर बनाने आया हूँ। तो माना भरपुर नहीं होती है?

जिज्ञासु:- तब भी जगह खाली रहती है।

बाबा:- खाली रहती है तो नम्बरवार आत्मा में हो गई या परिपूर्ण आत्मा में हो गई?

जिज्ञासु:- नम्बरवार में हो गई।

बाबा:- हाँ, फिर नम्बरवार थोड़े ही बनना है हमको। हमको क्या बनना है? लक्ष्य क्या मिला है जीवन का? नर से नारायण बनना है जो बुद्धि भरपूर हो जाये।

Time: 18.20-18.59
Student: Baba, no matter how much knowledge is taught to the intellect, how much knowledge it is taught day and night, yet the space remains empty.
Baba: *Acchaa*! So, it is mentioned in the murli: I have come to make the intellect of you children full. So, does it not become full?
Student: Even then the space remains empty.
Baba: It remains empty. So, is it a number wise soul or a perfect soul?
Student: It is a number wise soul.
Baba: Yes. Then, we don't have to become numberwise [souls]. What do we have to become? What is the goal of our life? We have to change from a man to Narayan so that the intellect becomes full.

समय:-19.08 से 22.38

जिज्ञासु:- बाबा, कबीरदास पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन ऐसा-2 पद्य लिखकर गए...

बाबा:- माना सारी दुनियां अभी पढ़ी लिखी है? हम जो यहाँ बैठे हुये हैं जो पढ़ाई लिखाई पढ़ी है वो ईश्वर की पढ़ाई लिखाई पढ़ी है या दुनियांवी पढ़ाई लिखाई पढ़ी है? पढ़े, लिखे होने से कुछ नहीं होता। वो आत्मा में भी संगमयुग का ज्ञान भरा हुआ है। पढ़े, लिखे होने की बात नहीं है। व्यास में कौनसा ज्ञान भरा हुआ था जो इतना ढेर सारे शास्त्र लिख दिये? वो कहाँ से आया ये सारा ज्ञान? वो आत्मा में संगमयुग से सारी बातें आती हैं। संस्कार भरे हुये हैं आत्मा में। तो दुनियांवी पढ़ाई पढ़ने की कबीरदास को दरकार नहीं थी। लेकिन उन्होंने जो कुछ लिखा वो सारा लिखी हुई बातें शिवबाबा की बातों से मिलती जुलती हैं। जैसे गुरुनानक की ढ़ेर सारी बातें बोली हुई शिवबाबा की बातों से मिलती

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जुलती है। परन्तु उन्होंने भी गड़बड़ कर दिया। मालुम है क्या गड़बड़ कर दिया? क्या? क्या गड़बड़ कर दिया?

जिज्ञासु:- आत्मा सो परमात्मा कर दिया।

Time: 19.08-22.38
Student: Baba, Kabirdas was not litrate but he wrote such poetries…
Baba: Does it mean that the entire world is literate now? We, who are sitting here, have we studied God's knowledge or worldly knowledge? Nothing happens by being educated. That soul also contains the knowledge [that it had obtained in] the Confluence Age. It is not about being educated. Which knowledge did Vyas have that he wrote so many scriptures? From where did all that knowledge emerge? All the topics enter that soul during the Confluence Age. The *sanskar* are filled in the soul. So, Kabirdas did not require to study the worldly knowledge. But whatever he wrote tallies with the versions of Shivbaba. For example, many of the things said by Guru Nanak matches with Shivbaba's versions. But they too have made a mistake. Do you know what mistake they committed? What? What is the mistake that they committed?
Student: They considered the soul to be the Supreme Soul.

बाबा:- हाँ, अपनी आत्मा को भगवान समझ लिया। चदरिया झीनि भीनि रे। सो चादर सुर नर मुनि ओढी ओढके मैली कीनि चदरिया और दास कबीर ने ऐसी ओढी ज्यों की त्यों धर दीनि चदरिया। तो भगवान बन गये ना। अरे, ये तो भगवान का ही पार्ट है। चदरिया माने शरीर रुपी वस्त्र। 16 हजार शरीर रुपी वस्त्रों को भी पहन ले तो भी रिजल्ट क्या निकलेगा? चदरियां ज्यों की त्यों धरी रहेंगी, पतित नहीं बनेंगी और ही पावन बन जावेंगी। कबीरदास ने चदरियों को क्या पावन बनाया था? कबीरदास ने भी ऐसे ही कह दिया, गुरुनानक ने भी ऐसे ही कह दिया। उनके भक्तों ने भी यही बात समझली। ये तो भगवान का पार्ट है। ढेरों के संसर्ग संपर्क में आता है फिर भी न खुद पतित बनता है, न दूसरों को पतित बनाता है। पतितपने से बच्चे पैदा होते हैं। पतितपने से शक्ति क्षीण होती है। मन की भी शक्ति क्षीण होती है, वायब्रेशन की शक्ति क्षीण होती है, बुद्धि की शक्ति क्षीण होती है, इन्द्रियों की शक्ति क्षीण होती है। उससे बच्चा पैदा होता है। अगर इन्द्रियाँ कंट्रोल में हैं तो कंट्रोल करना कौन सिखाता है? शिवबाप ही सिखाता है। और वो एक ही मुकर्रर रथ में आकर सिखाता है। अनेक रथों में प्रवेश करके नहीं सिखाता। इसलिए एक का ही ये गायन है। आत्मा सो क्या बन जाती है? परम पार्ट बजाने वाला हीरो पार्टधारी क्या बनता है? परमात्मा। भक्तिमार्ग में उन्होंने सबके लिए बोल दिया आत्मा सो परमात्मा।

Baba: Yes. He considered his soul to be God. *Cadariyaa jhiini bhiini re. So caadar sur, nar, muni orhi orhke maili kiini cadariyaa aur daas Kabir ne aisi orhi jyon ki tyon dhardiini*

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

cadariyaa[8]. So, he became God, didn't he? *Arey*, this is only the *part* of God. *Cadariyaa* means cloth like body. Even if He wears 16000 cloth like bodies, what will be the *result*? The clothes will remain as they were; they will not become sinful. They will become even more pure. Did Kabirdas make the clothes pure? Kabirdas as well as Guru Nanak simply said the same thing. Their devotees also interpreted it to be that way. This is God's *part*. He comes in contact and connection with many; even then neither does He Himself become sinful nor does He make others sinful. Children are born through sinfulness. The power declines due to sinfulness. The power of the mind declines, the power of vibrations declines, the power of the intellect declines, the power of the *indriyaa*[9] declines. A child is born through such [decline of power]. If the *indriyaa* are under *control*, then who teaches [us] to *control* [the *indriyaa*]? It is the Father Shiva Himself who teaches this. And He teaches this by coming only in one permanent chariot. He does not teach this by entering many chariots. This is why this glory pertains to only the one. What does the soul become equal to? What does the hero actor, who plays the supreme role become? The Supreme Soul. In the path of *bhakti*, they have said for everyone that the soul becomes equal to the Supreme Soul. … (to be continued.)

Part-4

समय:- 22.44 से 22.53

जिज्ञासु:- बाबा, तुरियावस्था क्या होती है?

बाबा:- तुरिया माना सबसे अलग। 500-700 करोड़ से भी अलग। जैसी अवस्था और किसीकी बन ही नहीं सकती।

Time: 22.44-22.53
Student: Baba, what is meant by *turiyaa* (unique) stage?
Baba: *Turiyaa* means different from everyone else. Different from the 5-7 billion [souls]. Nobody else can achieve that stage at all.

समय:-23.05 से 23.45

जिज्ञासु:- … प्रकाश्मय है, ज्योति है, प्रकाश है।

बाबा:- कौन है ज्योति सदाकाल?

जिज्ञासु:- सदा काल ज्योति जिसके तन में आया है परमात्मा वो ज्योति सदाकाल है...

बाबा:- जो सदाकाल ज्योति है वो संगमयुग में भी सदाकाल ज्योति है और जब तक संगमयुग है तब तक लगातार चढ़ती कला है। उतरती कला का नाम निशान नहीं होता। और बाकी जो आत्मायें हैं वो चढ़ती उतरती कला में आती हैं।

[8] A very delicate cloth; the deities, human beings and sages wore that cloth and they dirtied it by wearing it but Kabirdas wore it in such a way that the cloth remained as it was.
[9] Parts of the body

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 23.05-23.45
Student: … He is luminous, He is light.
Baba: Who is a light forever?
Student: The [soul] in whose body the Supreme Soul has come is forever a light.
Baba: The one who is forever a light is forever a light in the Confluence Age as well. And as long as the Confluence Age exists, celestial degrees keep increasing continuously. The celestial degrees do not decrease at all. And the rest of the souls pass through ascending or descending celestial degrees.

समय:- 23.46 से 24.28

जिज्ञासु:-अभी 400-500 वर्ष पहले कबीर का जन्म हुआ तो विकार से पैदा नहीं हुये कबीर।

बाबा:- जैसे क्राइस्ट के लिए कह दिया क्राइस्ट का जन्म कन्या से हुआ। कुमारी कन्या से। ऐसे ही यहाँ अंधश्रद्धालुओं ने मान लिया कि कबीर का जन्म विकारों से नहीं हुआ। अरे, कोई प्रूफ है, कोई प्रमाण है? बिना प्रूफ और प्रमाण के मानने वालों को क्या कहा जाता है? तुम बच्चे बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चे हो। बिना प्रूफ और प्रमाण के कोई बात मानने वाले नहीं हो। कोई प्रूफ और प्रमाण बतायें कि क्राइस्ट का जन्म कुमारी कन्या से हुआ था।

Time: 23.46-24.28
Student: Kabir was born 400, 500 years ago; but Kabir was not born through vice.
Baba: (Baba is laughing). Just as it has been said for Christ that Christ was born to a virgin, to a pure virgin, similarly, people believed with blind faith that Kabir was not born through vices. *Arey*, is there any *proof*? What are the people, who believe anything without proofs, called? You children are the intelligent children of the intelligent Father. You are not the ones who believe anything without *proof*. Let someone give the *proof* that Christ was born to a virgin.

समय:- 24.28 से 25.18

जिज्ञासु:- बाबा, भगवान आयेगा तो कोई शास्त्र उठाकर पढ़ायेगा? जैसे कबीर आया, तुलसी आए, सुर आए।

बाबा:- तो कबीर आये, तुलसी आये उन्होंने मनुष्यों के बनाये हुये शास्त्र पढ़े।

जिज्ञासु:- उन्होंने अपने जुबान से बोला। क्राइस्ट आया, जो भी आये बडे-2 उन्होंने बोला कोई शास्त्र पढ़ करके नहीं सुनाये शास्त्र बाद में बने हैं।

बाबा:- हाँ-2 ठीक है बाद में बने कि पहले से ही बने? कबीरदास के आने से पहले से ही शास्त्र बने हुये हैं या बाद में बने हैं? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) तो उन्हीं को पढ़-2 करके उन्होंने बाद में लिख दिया। कबीरदास ने जो कुछ भी लिखा, वो शास्त्रों में बातें पहले से ही लिखी हुई हैं। नई बात कोई नहीं लिख दी। शिवबाबा ही आकर के नई बातें बताते हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 24.28-25.18
Student: Baba, when God comes, will He teach through scriptures? For example, Kabir came, Tulasi came, Sur came…
Baba: Kabir came, Tulasi came; they read the scriptures written by human beings.
Student: Whether Christ came or whichever big personality came, they spoke through their mouth; they did not read out the scriptures. The scriptures are made afterwards.
Baba: Yes, it is correct; were they written later or were they already written? Were the scriptures written before the arrival of Kabirdas or were they written later? (Student said something.) So, they read the same and wrote later on. Whatever Kabirdas wrote was already written in the scriptures. He did not write anything new. Shivbaba alone comes and narrates new things.

समय:-25.20 से 25.39

जिज्ञासु:- राम और शंकर में क्या फर्क है बाबा?

बाबा:-वो तो एक ही हैं। "शिवद्रोही ममदास कहावा सो नर सपनेहु मोहि न पावा' 'औरों एक गुप्त मत सबै कहूँ कर जोर शंकर भजन बिना नर भगति कि पावै मोर।" जो शंकर है वो ही राम है।

Time: 25.20-25.39
Student: Baba, what is the difference between Ram and Shankar?
Baba: They are one and the same. '*Shivdrohi mam daas kahaavaa so nar sapnehu mohi na paavaa*.' (The one who is hostile towards Shiva cannot be my servant; he cannot attain me even in his dreams) '*Auron ek gupt mat sabai kahun kar jor Shankar bhajan binaa nar bhagat ki pavey mor.*' (I tell everyone a secret with folded hands that a devotee cannot find Me without worshipping Shankar). Shankar himself is Ram.

समय:- 25.39 से 26.06

जिज्ञासु:-बाबा शंकर…

बाबा:- एक ही बात है।

जिज्ञासु:- एक ही बात है?

बाबा:- हाँ जी, शिव द्रोही, शिव जो है वो शंकर के अंदर प्रवेश करेगा तब ही द्रोह और प्रेम पैदा होगा। अगर साकार में प्रवेश न करे तो द्रोह भी पैदा नहीं होगा, दुश्मनी भी पैदा नहीं होगी और दोस्ती भी पैदा नहीं होगी।

Time: 25.39-26.06
Student: Baba. Shankar…
Baba: It is one and the same thing.
Student: It is one and the same thing?
Baba: Yes. As regards *Shiv drohi*, *droh* (hostility) and *prem* (love) will emerge only when Shiva enters Shankar. If He does not enter in the corporeal form, then neither hostility neither enimity nor friendship will emerge.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय:-26.15 से 27.30

जिज्ञासु:-बाबा, ... उनके जो फॉलोवर्स है उनसे हमारी बात हुई थी वो लोग बोलते हैं कि हमारे महाराज को महाकाल ने साक्षात्कार करवाया 2020 तक दुनियां विनाश हो जायेगा। बाबा, बताइए उनको साक्षात्कार कौन करवाया?

बाबा:- ये तो गुरुनानक को, तुलसीदास को, सूरदास को, रैदास को, मीरा को साक्षात्कार होते रहे, आज भी बहुतों को भूत, प्रेत आत्मायें साक्षात्कार कराती रहती हैं। ये कोई बड़ी बात है क्या? ड्रामा में है तो हो जाता है। कोई को सपना आता है। ये सपना कौन कराता है? अरे, अपने पूर्व जन्मों का हिसाब किताब उनका उदित होता है साक्षात्कार हो जाता है। स्वप्न आ जाता है। ये कोई खास बातें नहीं हैं। ये भक्तिमार्ग की बातें हैं।

Time: 26.15- 27.30

Student: Baba … I had a talk with their followers; they say Mahakal gave vision to our maharaj (here, a religious leader) that destruction will take place by 2020. Baba, who gave vision to them?

Baba: Guru Nanak, Tulsidas, Surdas, Raidas, and Meera kept having visions; even today ghosts and spirts keep giving visions to many people. Is this a big deal? If it is fixed in the *drama*, then it happens. Some people have dreams. Who enables them to have these dreams? *Arey*, when their karmic account of the past births emerges, they have vision, they have dream. These are not important topics. These are the topics of the path of *bhakti*.

जिज्ञासु:- बाबा, जो बड़े-2 धर्म गुरु हैं वो कहते हैं हमको साक्षात्कार हुआ।

बाबा:-अच्छा, वो साक्षात्कार हुआ तो उनके लिए हुआ, हमारे लिए क्या हुआ?

जिज्ञासु:- उनके फॉलोअर्स कहते हैं कि...

बाबा:- तो फॉलोअर्स बुद्धू हैं ना तभी तो मानते हैं। सत वचन महाराज कौन करते हैं? बुद्धू लोग करते हैं या बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चे करते हैं? बुद्धू लोग हैं।

Student: Baba, the big religious gurus say that they had visions...
Baba: *Acchaa*, they had visions for themselves; what about us?
Student: Their followers say that...
Baba: So, those *followers* are fools; that is why they believe them. Who says '*satvacan maharaj* (whatever you say is true, sir)'? Do fools say so or do the intelligent children of the intelligent Father say so? They are fools. … (to be continued.)

Part-5

समय:-27.38 से 32.39

जिज्ञासु:-अभी ... चल रहा है...

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा:-अरे, दुनियां में जाने क्या-2 चल रहा है। हम दुनियां तरफ अपनी आँखें क्यों चौड़ी-2 करते हैं? अपने अंदर... हमें क्या मिला है सो तो हम देखें।

जिज्ञासु:- ...ज्योति क्या है, प्रकाश क्या है, लाइट क्या है...

बाबा:- लाइट और प्रकाश की, कथनी, करने की बात नहीं है। जब हमारे अंदर लाइट और रोशनी आ जायेगी तो हमें दूसरों को सुनाने की दरकार नहीं रहेगी। जैसे पारस पत्थर का मिसाल है। कोई भी संपर्क में आयेगा और हमसे प्रभावित हुये बिगर नहीं रहेगा। जैसे पारस पत्थर का मिसाल है लोहे को स्पर्श किया और परिवर्तन हो जाता है। ऐसे ही जो-2 आत्मायें संपूर्ण बनती जावेंगे उनको फिर बोल-2 करने की दरकार नहीं रहेगी। वाणी से परे की स्टेज हो जावेगी।

जिज्ञासु:-वाणी से परे काई हुआ ही नहीं।

बाबा:- हुआ ही नहीं। क्योंकि अभी कोई पुरूषार्थ में परिपूर्ण हुआ ही नहीं है। पहले बच्चा परिपूर्ण होगा कि पहले बाप परिपूर्ण होगा?

जिज्ञासु:- बाप परिपूर्ण बन करके बच्चे को भी बनायेगा ना।

बाबा:- बनायेगा वो तो बनाय ही रहा है। बच्चों में बच्चा पहला है कौन?

जिज्ञासु:- कृष्ण बच्चा है वो भी अधूरा है। पहला बच्चा तो कृष्ण है।

बाबा:- पहले उसको तो दे दान तो छूटे ग्रहण।

Time: 27.38-32.39
Student: Even now... is going on…
Baba: *Arey*, what all is going on in the world. Why do we look at the world? [Let us see] within us, let us see what we have achieved.
Student: … what is light?
Baba: As regards light, it is not something to be spoken of. When we develop *light* within us, then there won't be any need for us to explain to others. For example, there is the *paaras patthar*[10]; whoever comes in contact with us will not escape without being influenced by us. For example, it is said about the *paaras patthar* that if you touch iron with it, it changes [to gold]. Similarly, the souls which go on becoming perfect will not require to speak. They will achieve a stage beyond speech.
Student: No one has achieved a stage beyond speech.
Baba: No one has achieved it because no one has become perfect in *purushaarth*[11] yet. Will the child become perfect first or will the Father become perfect first?
Student: The Father Himself will become perfect and then make the child perfect, will he not?
Baba: He will make [him perfect]. He is certainly making [him perfect]. Who is the first child among all the children?
Student: It is the child Krishna, he is also incomplete. The first child is Krishna.

[10] A mythical stone believed to transform everything that touches it into gold.
[11] Spiritual effort

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: So, first he… Give donation to him so that he becomes free from the bad influence of the eclipse (*de daan to chhuute grahan*).

जिज्ञासु:- जब वही नहीं हुआ अभी तक भी तो बाकी लोगों …

बाबा:- तो इसका मतलब हम छोड़ के भाग जायें क्या? हम छोड़ के भाग जायें?

जिज्ञासु: भागने की क्या बात है?

बाबा: हाँ, तो दे दान तो छूटे ग्रहण। उसके लिए हम प्रयत्नशील रहें। भागने की बात नहीं है। हम जानते हैं कि बच्चों में बड़ा बच्चा है कृष्ण बच्चा। कृष्ण बच्चे की सद्गति होगी तो सबकी सद्गति हो जावेगी। एक के पतित बनने से सब पतित हो जाते हैं, एक के पावन बनने से सब पावन हो जाते हैं। ये भी जानते हैं कि कृष्ण की आत्मा का अपना शरीर नहीं है। वो भी कोई दूसरे में प्रवेश करके पार्ट बजाता है। तो जिसमें पार्ट बजाता है हम उसको योग का दान दें, देना पड़ेगा। क्योंकि हमने प्रकृति को पोल्यूट किया है। जन्म जन्मांतर मनुष्यों ने प्रकृति को पोल्यूट किया है या प्रकृति को ऊँचा उठाया है? कुदरत को नीचे किसने गिराया? मनुष्यों ने गिराया। और मनुष्यों को ही ऊपर उठाना पड़ेगा। मनुष्यों में भी जो नम्बरवार मनुष्य हैं जो मन, बुद्धि वाली आत्मायें हैं उनको पहले प्रयत्न करना पड़ेगा। दूसरे तो बाद में उनको फॉलो करते हैं। मुख्य बात है हमको ज्ञान मिला? बाप मिला या नहीं मिला?

जिज्ञासु: बाप मिला।

बाबा: जब बाप मिला तो छोड़ के भागने की क्या बात पैदा हो जाती है? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) ये तो अनिश्चय वाली बात हो गई। अरे, बाप मिला, अरे, 70 साल हो गये, और अभी तक कुछ भी नहीं हुआ। इसका मतलब टाय निकल गई।

Student: When he himself has not yet become [perfect], then what can be said about the rest?
Baba: So, does it mean that we should leave and run away? Should we leave and run away?
Student: There is no question of running away.
Baba: Yes, so, if you give donation, the eclipse will fade out. We should keep making effort for that. There is no question of running away. We know that the eldest child among all the children is child Krishna. When child Krishna attains true salvation, then everyone else will attain true salvation. When one becomes sinful, everyone becomes sinful; when one becomes pure, all become pure. You also know that the soul of Krishna does not have its own body. He too enters someone else and plays his *part*. So, we should give the donation of yoga to the one in whom he plays his role; and we **will have to** give [the donation] because it is we who have polluted the nature. Have human beings polluted nature for many births or have they uplifted it? Who has brought the downfall of nature? It is the human beings. And it is the human beings who will have to uplift it. Even among the human beings, the numberwise human beings, the souls with mind and intellect will have to try first. Others *follow* them later on. The main thing is: have we received knowledge? Have we found the Father or not? (Student: we have found the Father.) When we have found the Father then why does the topic of running away arise? (The student

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

said something.) This is a sign of doubt [thinking:] *Arey*, we have found the Father; it has been 70 years, and nothing has happened so far. It means that you have lost faith.

जिज्ञासु:- बाप तो करन करावनहार है।

बाबा:- हाँ, करन करावनहार माना बाप ही करेगा। हम कुछ नहीं करेंगे। हम पुरुषार्थ, वुरुषार्थ कुछ करने वाले नहीं है।

जिज्ञासु:- बच्चे थोड़े ही करते हैं। मैं सेवा कराता हूँ, मैं प्रवेश करके कार्य कराता हूँ ...। तो बच्चें क्या है? ... ड्रामा के अन्दर है।

बाबा:- मतलब?

जिज्ञासु:- जैसे उसका रील चलेगा वैसे ही बच्चें अपना नाच करेंगे।...

बाबा:- बच्चे अपना नाच करेंगे, भगवान अपना नाच करेगा।

जिज्ञासु:-वो भी जो आया हुआ है वो ड्रामा के पार्ट में बँधा हुआ है।

बाबा:-लेकिन परिवर्तन करने वाली आत्मा कौन है?

जिज्ञासु:- परिवर्तन करने वाली कराने वाला है...

बाबा:- तो उसकी महिमा करो।

जिज्ञासु:- महिमा करते-2 थक गये हम लोग।

बाबा:- थक गये। थक गये तो ठण्डे होकर के बैठो थोड़ी देर। असलियत सामने बोल दी सबके। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ-2 जो लड़ रहे हैं उनको लड़ने दो। अगर उनको संभाल सकते हैं तो संभालें। नहीं संभाल सकते हैं तो हम अपने को इतना मजबूत बनायें कि उनकी लड़ाई का असर हमारे ऊपर न हो जाये।

Student: The Father is the Doer and Enabler.
Baba: Yes. [He is the] Doer and Enabler means that the Father alone will do [everything]. We will not do anything. We are not going to make any *purushaarth*. (Baba is saying ironically).
Student: [Baba says that] the children don't do anything, I enter and enable them to do service, I make them do the work. So, what are the children? … They are bound by the drama…
Baba: What does it mean?
Student: The children will act as its reel rotates.
Baba: Children will act in their own way; God will act in His own way.
Student: The one who has come is also bound by drama's part.
Baba: But which soul brings transformation?
Student: The one who brings transformation is present…
Baba: So, glorify Him.
Student: We are tired of glorifying Him.
Baba: You are tired. (Baba is laughing) If you are tired, then sit cooly for a while. You have spoken the truth in front of everyone. ☺

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student said something.
Baba: Yes, yes, let those who are fighting fight. Manage them if you can. If you cannot manage them, then you should make yourself so strong that their fight does not affect you.

जिज्ञासु:- असर नहीं होगा लेकिन बीमारी फैलती है तो सबके ऊपर बीमारी फैलती है ना।
बाबा:-तो बीमारी को... बीमारी फैलती है तो उसके लिए इलाज किया जाता है कि भाग खड़े होते हैं?
जिज्ञासु:- हम बाबा याद करते हैं, इतना योग करते हैं, इतना सेवा करते हैं ...
बाबा:- इतना? हम समझते हैं हम इतना करते हैं और करते कुछ भी नहीं, तब? अगर हम इतना करेंगे तो पहले हमारे ऊपर असर पड़ेगा या दूसरे के ऊपर असर पड़ेगा? पहले तो हमारे अंदर परिवर्तन आना चाहिए। हमारे अंदर शक्ति आनी चाहिए। शक्ति अनुभव होनी चाहिए।

Student: It won't affect us but when disease spreads it spreads to all, doesn't it?
Baba: So, when the disease spreads, do you seek treatment or do you run away?
Student: We remember Baba so much, we serve so much …
Baba: So much? We think: we do so much. But we do not do anything; then? If we do so much, then will it affect us first or will it affect others first? First there should be transformation in us. We should have the power. We should experience power.

समय:-32.39 से 33.53
जिज्ञासु:- बाबा, आपने जो ज्ञान दिया है...
बाबा:-मैंने कहाँ ज्ञान दिया? अरे, सारी मुरली का ज्ञान है। मेरा ज्ञान कहाँ से आ गया? ये तो तुमने ठीक ज्ञान नहीं उठाया भाई।

Time: 32.39-33.53
Student: Baba, the knowledge that you have given…
Baba: I have not given the knowledge. *Arey*, the entire knowledge is contained in the murli. Where did my knowledge emerge from? Brother, you did not grasp the knowledge properly.

जिज्ञासु:- परिवार में जाकर जब सुनाते हैं तो कहते हैं ये सब फाल्तू बातें हैं...
बाबा:-हाँ, वो कहते हैं कि तुम फाल्तू बात करते हो और उसी बात को ले करके तुमने यहाँ पूरी भरी सभा में सुना दिया कि हमारे घर वाले कहते हैं कि तुम फाल्तू बात करते हो। इसका मतलब क्या हुआ? इसका मतलब ये हुआ कि घर वालों के कहने का तुम्हारे ऊपर असर पड़ गया। तुम उनकी प्रजा बन गये, प्रभावित हो गये। और उस बात को तुम बहुत बड़ा समझते हो। तब तुम यहाँ सारी मजमे के बीच में समझा रहे हो, सुना रहे हो, कि हमको घर वालों ने ऐसे कहा-ये ज्ञान तो बिल्कुल बेकार है।
जिज्ञासु:- हम नहीं प्रभावित हुये।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा:- तुम प्रभावित नहीं हुये? तो फाल्तू बात को यहाँ सुनाने की दरकार ही क्या? मस्त रहो।

Student: When I narrate [the knowledge] to my family members they say, all this is a waste…
Baba: Yes, they say that you speak wasteful things. And you said the same in the packed gathering here that your family members say that you speak wasteful things. What does it mean? It means that you were influenced by what your family members say. You became their subjects; you were influenced. And you think that to be a big issue. That is why you are explaining and narrating it in the packed gathering that your family members said that this knowledge is an absolute waste.
Student: I am not influenced…
Baba: Were you not influenced? So, what is the need to narrate wasteful things here? Remain carefree. … (to be continued.)

Part-6

समय:-34.04 से 36.46

जिज्ञासु:-पृथ्वी के चारों तरफ स्पेस बताये हैं,...

बाबा:- पृथ्वी के चारों ओर वायुमण्डल है और वायुमण्डल से ऊपर स्पेस है।

जिज्ञासु:- उसके ऊपर परमधाम बोले हैं।

बाबा:- हाँ जी।

जिज्ञासु:- और आत्मायें अनेक हैं सुप्रीमसोल एक है तो किधर माना जाय?

बाबा:-आत्मा चैतन्य है या आत्मा जड़ है? जैसे ये जड़ चीज है। यहाँ रख दी तो यहीं रखी रहेगी। आत्मा जड़ है या चलने वाली चलनशील है, चैतन्य है? चैतन्य है। तो विनाश होने के बाद आत्मा ऐसा नहीं है कि ऊपर लटक जाती है। ये पृथ्वी गोल है, गोल पृथ्वी के चारों ओर वायुमण्डल है, वायुमण्डल के चारों ओर स्पेस है, जिसमें सूरज, चाँद, सितारे दिखाई देते हैं। उन सूरज, चाँद, सितारों की स्पेस की दुनियां के पार चारों तरफ जो वातावरण है निल उसको परमधाम कहा जाता है। उस परमधाम में ऐसे नहीं आत्मायें ऊपर हैं या परमधाम नीचे है या इधर है या उधर है। नहीं। जो भी आत्मायें विनाश काल में शरीर छोडेंगी वो बुद्धि की तीव्रता के अनुसार सारे के सारे पृथ्वी के स्पेस को कवर करके रहेंगी। माना कीट, पशु, पक्षी, पतंगे हैं वो जड़ बुद्धि आत्मायें । वो पृथ्वी के नजदीक-2 रहेंगी घेर करके। और जो मनुष्यों की आत्मायें है वो नम्बरवार उन कीट, पशु, पक्षी, पतंगों को चारों ओर से घेर करके रहेंगी। और मनुष्यों में जो सर्वोपरि हीरो पार्टधारी है वो सबको घेर करके रहेगा और सुप्रीम सोल शिव वो सबसे परे ते परे है। वो किसीकी (भी) पकड़ से बाहर है।

Time: 34.04-36.4
Student: It is said that there is space all around the Earth...
Baba: There is atmosphere surrounding the Earth and there is *space* surrounding the atmosphere.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: It is said that there is the Supreme Abode above it.
Baba: Yes.
Student: There are numerous souls and the Supreme Soul is one, so, where does He reside?
Baba: Is the soul living or non-living? For example, this is a non-living thing. If it is kept here; it will stay here itself. Is the soul non-living or dynamic? Is it living? It is living. So, after destruction, it is not that the soul hangs above; this Earth is spherical; there is atmosphere surrounding the spherical Earth; there is *space* surrounding the atmosphere in which we see the Sun, the Moon and the stars. Beyond that world of *space* containing the Sun, the Moon and the stars; the *nil* atmosphere that surrounds it is called the Supreme Abode. In that Supreme Abode it is not that the souls are above or that the Supreme Abode is below or it is on this side or on that side. No. All the souls who will leave their body at the time of destruction will cover the entire *space* surrounding the Earth as per the sharpness of their intellect. It means that the insects, animals, birds [and] moths have non-living intellect. They will surround the Earth from close quarters. And the human souls will surround the souls of the insects, animals, birds [and] moths number wise[12]. And the highest hero actor among the human beings will surround everyone. And the Supreme Soul Shiva is beyond everyone. He is beyond the reach of everyone.

जिज्ञासु:- एक ही जगह स्थिर रहेगा कि चारों तरफ घुमता रहेगा?
बाबा:-हम आत्मा यहाँ बैठे-2 क्या अनेक तरफ हम कंट्रोल नहीं कर सकते? तो ये आत्मा की चैतन्यता है। जितनी ज्यादा तीव्र गति से आत्मा चैतन्य बनेगी उतना अनेकों को कंट्रोल कर सकती है। विश्व का बादशाह कोई ऐसे ही नहीं बन जाता है। एकाग्रता की शक्ति इतनी ज्यादा बढ़ जाती है कि 500 करोड़ मनुष्य आत्माओं को कंट्रोल कर सकती है।

Student: Will He stay in one place or will He roam in all the directions?
Baba: Can't we souls *control* many sides while sitting here (*in* the *bhrikuti*)? So, this is the consciousness (*caitanyataa*) of the soul. The faster a soul becomes living (*caitanya*), the more it will be able to *control* many [souls]. Someone does not become the emperor of the world simply. The power of concentration increases so much that it can control the 5 billion human souls.

समय:- 36.54 से 38.15
जिज्ञासु:-बाबा, टी.वी. के सीरियल में रावण को पुष्पक विमान मिला।....
बाबा:- पुष्पक विमान कोई दूसरी चीज नहीं होती है। अभी पुरूषार्थ करने वाले रावण सम्प्रदाय भी हैं और राम सम्प्रदाय भी हैं। दोनों हैं कि नहीं हैं? तो जो रावण सम्प्रदाय हैं वो भी पुष्प कर रहे हैं। पुष्प करना माना फूल बनाना। क्या? वो भी काँटों को क्या बना रहे हैं? वो भी फूल बना रहे हैं। जितनी उनको अक्ल भगवान से मिली हुई है वो रावण सम्प्रदाय वाली आत्मायें चाहे एडवान्स की बीजरुप आत्मायें हों और चाहे बेसिक में आधारमूर्त आत्माओं में से हों नम्बरवार उनमें रावण सम्प्रदाय हैं या नहीं हैं? बेसिक वालों में भी रावण सम्प्रदाय हैं, एडवान्स पार्टी वालों में भी रावण सम्प्रदाय हैं। वो

[12] According to their stage in the Supreme Abode.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

रावण सम्प्रदाय जितनी-2 जिसने पढ़ाई को कैच किया है उतना फूल बनाने की सेवा में लगे हुये हैं। उसी को कहते हैं पुष्पक विमान। ये आत्मा रुपी विमान है। वो विमान नहीं है जो स्थूल विमान शास्त्रों में दिखाय दिया है।

Time: 36.54-38.20
Student: Baba, in a TV serial [it is shown that] Ravan receives *pushpak vimaan*...
Baba: *Pushpak vimaan* (aeroplane) is not something else. Now the community of Ravan as well as the community of Ram is making *purushaarth*. Do both of them exist or not? So, the community of Ravan is also making flowers. What? What are they too transforming thorns into? They are also transforming it into flowers to the extent they have received intellect from God. Those souls of the community of Ravan, whether they are the seed form souls of the advance [knowledge] or whether they are from among the number wise root like souls of the basic [knowledge], is there the community of Ravan among them or not? There is the community of Ravana among those who follow the basic knowledge as well as those of the advance party. That community of Ravan is engaged in the service of making flowers to the extent they have grasped the knowledge. That itself is called *Pushpak Vimaan*. This is a soul like aeroplane. It is not that physical aeroplane which has been depicted in the scriptures.

समय:- 38.22 से 39.54

जिज्ञासु:- बाबा, सूरदास जन्म से अंधे थे कि बाद में अंधे हुये?

बाबा:- अच्छा, ब्रह्माबाबा पहले से ही अंधे थे या बाद में अंधे हुये? जो कुछ है वो सब संगमयुग में देखो। इसका जवाब दो। ब्रह्मा बाबा अज्ञान के अंधे जन्म से थे या बाद में हुये? पहले सोझरे थे क्या? पहले उन्होंने बाप को पहचाना था क्या? अरे, बात का जल्दी-2 जवाब दो फिर आगे बढ़े। ब्रह्मा बाबा अंधे थे या सोझरे थे? अरे, धृतराष्ट्र थे या युधिष्ठिर थे? अंधे की औलाद अंधे थे या सोझरे की औलाद सोझरे थे? अरे, बोलते काहे नहीं? अंधे थे। तो जन्म से अंधे थे या बीच में अंधे हो गये? जन्म से थे। तो संगमयुग में जब जन्म से अंधे थे तो सूरदास का जन्म लिया सूरसागर लिखा तो उस समय भी जन्म से अंधे थे। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) अरे, ये कोई बात है, पूर्व जन्म के संस्कार नहीं होते है?

Time: 38.22-40.00
Student: Was Soordas blind by birth or did he become blind later?
Baba: *Acchaa*, was Brahma Baba blind from the beginning or did he become blind later on? Look for everything in the Confluence Age. Reply to this question. Was Brahma Baba blind due to ignorance by birth or did he become blind later? Did he have eyesight earlier? Did he recognize the Father earlier? *Arey*, reply quickly so that we can proceed. Was Brahma Baba blind or did he have eyesight? *Arey*, was he Dhritrashtra or was he Yudhishthir? Was he a blind son of a blind one or was he an eyed son of an eyed person? *Arey*, why don't you speak? He was blind. So, was he blind by birth or did he become blind in between? He was blind by birth. So, when he was blind by birth in the Confluence Age, then he was blind by birth even when he was

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

born as Soordas and wrote Soorsagar. (Student said something.) *Arey*, is this something to ask? Are there not the *sanskars* of the previous births?

समय:- 40.02 से 42.39

जिज्ञासु:- बाबा। साढ़े पाँच सौ करोड़ आत्मायें कब मानेंगी बाप को?

बाबा:- 500 करोड़ आत्मायें कब मानना शुरू करेंगी?

जिज्ञासु:-अभी कितना समय और लगेगा बाबा साढ़े पाँच सौ करोड़ आत्माओं को?

बाबा:-कितना समय लगेगा? हम थक गये अब ऐसे। आप मुये मर गई दुनियां। अपने देहभान को आज ही हम मार दें। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) दूसरों के मरने का हम इंतजार क्यों कर रहे हैं? इंतजाम करना अच्छा है, या इंतजार करना अच्छा है? अगर ऐसे कहेंगे इंतजाम नहीं करना है तो फिर हम किस लिस्ट में चले गये? भक्तों की लिस्ट में चले गये या ज्ञानियों की लिस्ट में चले गये? अभी भक्ति का संस्कार हमारे अंदर नहीं रहना चाहिए। कर मिट या मर मिट। या तो करके छोड़ना है या तो शरीर ही छूट जाये कोई हर्जा नहीं। चींटे को देखा है चींटे को? चींटा होता है अगर चींटा कोई को काट ले, चिपट जाये और उसको आधा-2 तोड दो तो भी छोड़ेगा नहीं। ऐसा ब्राह्मण बनना है। छोड़ देने और भाग खड़े होने के तो संस्कार ही नहीं होना चाहिए। नहीं तो दूसरे धर्म में चले जावेंगे।

जिज्ञासु:- हर एक आत्मा मे धर्मों का बीज है ना बाबा। जिस धर्म में जानी होगी आत्मा तो जाएगी ही।

बाबा:-आपने कैसे जान लिया कि आप दूसरे धर्म के हैं? क्यों भागने की बातें करें ? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) बस, पक्के सूर्यवंशी हैं। इस सभा में जो बैठे हुये हैं वो पक्के सूर्यवंशी हैं। अरे, जब रिजल्ट निकल जायेगा तब की तब देखी जायेगी। अभी से हम क्यों खराब संकल्प करें?

Time: 40.02-42.39
Student: Baba, when will 5.5 billion souls accept the Father?
Baba: When will the five billion souls start accepting [the Father]?
Student: Baba, how much more time will it take for 5.5 billion souls?
Baba: How much time will it take? We have become tired now ☺. Is it so? When you die the world is dead for you. Let us end our body consciousness today itself. (The student said something.) (Baba is laughing.) Why are we waiting for others to die? Is it better to make arrangements (*intzaam*) or to wait (*intzaar*)? If we say, 'we need not make preparations', then we will be included in which *list*? Did we go to the *list* of devotees or to the *list* of knowledgeable ones? Now we should not have the *sanskars* of *bhakti* in us. Do or die. Either we should accomplish [the task] and then leave or it doesn't matter if we lose this body itself. Have you seen a big ant? If a big ant bites someone and clings to his skin then it will not leave him even if you cut it into two. You have to become such a Brahmin. You should not have the *sanskar* of leaving and running away at all. Otherwise you will go to other religions.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, every soul has the seed of [other religions] in it. So, the soul will certainly go to the religion it has to go.
Baba: How did you come to know that you belong to another religion? Why are you talking about running away? (Student said something.) Yes, we are firm *Suryavanshis*[13]. All those who are sitting in this gathering are firm *Suryavanshis*. *Arey*, we will see what happens when the results are declared. Why should we create bad thoughts from now itself? ... (to be continued.)

Part-7

समय:- 42.45 से 43.29

जिज्ञासु:- बाबा, सतयुग कब तक आयेगा?

बाबा:-सतयुग कब तक आयेगा? आज हम सत्य को धारण कर लें, असत्य को हम स्वीकार नहीं करेंगे। हमारे लिए आज ही सतयुग आ जायेगा। अपने ऊपर है। सतयुग कोई दूसरा युग नहीं होता है। सच्चाई को स्वीकार करना ही सतयुग है।

जिज्ञासु:- कलियुग का अंत कब होगा?

बाबा:- कलियुग का अंत कब होगा? माने शुद्रपने का अंत होगा तो कलियुग का अंत होगा। अरे, छोटे-2 प्रश्न क्यों पूछ रहे हो बड़े-2 पूछो ना।

Time: 42.45-43.29
Student: Baba, when will the Golden Age begin?
Baba: When will the Golden Age (*Satyug*) begin? ☺ Let us assimilate truth (*satya*) today; [make it firm:] we will not accept untruth, then the Golden Age (*Satyug*) will begin today itself for us. It depends on us. *Satyug* is not some other age. To accept the truth itself is *Satyug*.
Student: When will the Iron Age end?
Baba: When will the Iron Age end? When lowliness ends the Iron Age will end. *Arey*, why are you asking small questions? Do ask big questions.

समय:- 43.30 से 45.24

जिज्ञासु:- त्रिजटा और विभीषण ये दोनों का हद और बेहद का अर्थ क्या है?

बाबा:- त्रिजटा थी वो स्त्री चोला था। और जो विभीषण था वो पुरुष चोला था। जो काम विभीषण कर सकता है वो काम त्रिजटा नहीं कर सकती थी। विभीषण पुरुष चोला होने के कारण अपने भाई रावण का उसने मुकाबला किया। यहाँ जो भी आत्मायें बैठी हुई हैं वो अपने अंदर अनुभव करती हैं कि हम तो रावण सम्प्रदाय हैं कोई-2 बैठी हुई हैं। उनकी हर बात, उनका हर प्रयास, उनकी हर वाचा ऐसी ही निकलेगी कि हम ऐसा ही करके दिखायेंगे। तो ऐसों का विरोध करने वाला विभीषण पैदा होता है। वि माने विशेष, भीषण माना भयंकर। वो पुरुष चोला है। उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। कन्याओं,

[13] Those belonging to Sun dynasty

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

माताओं को तो कोई न कोई के संरक्षण में ही रहना पड़ता है। इसलिए वो कार्य नहीं कर सकती जो पुरुष कर सकते हैं। त्रिजटा ने क्या काम किया? सीता की सुरक्षा का कार्यभार सम्भाला। अंदर रही या बाहर रही? अरे, अंदर रह करके उसने कार्य किया या बाहर निकल करके कार्य किया? अंदर रह के कार्य किया। विभीषण बाहर निकल गया। क्या परवाह परीमहुवे में।

Time: 43.30-45.24
Student: What is the meaning of Trijata and Vibheeshan in a limited as well as unlimited sense?
Baba: Trijata was a female and Vibheeshan was a male. Trijata could not perform the task that Vibheeshan could perform. Due to being a male, Vibheeshan confronted his brother Ravan. All the souls who are sitting here feel in their mind: we belong to the community of Ravan. Some [souls] like this are sitting [here] whose every version, every effort, every word will be such: we will do just like this. So, Vibheeshan is born to oppose such ones. *Vi* means *vishesh* (special), *bheeshan* means *bhayankar* (frightening). He is in a male body; nobody can harm him. Virgins and mothers have to remain in someone's protection. This is why they cannot perform the tasks that men can. What did Trijata do? She was incharge of Sita's safety. Did she remain inside or did she remain outside? *Arey*, did she work by living inside or did she work by coming out? She remained inside and worked. Vibheeshan came out. Why to worry for the country when God is on our side (*Kyaa parvaah parimahuve me*)?

समय:-45.27 से 46.35

जिज्ञासु:- बाबा, यहाँ मिनी मधुबन कब बनेगा?

बाबा:- यहाँ कोई ज्योतिषी तो आया नहीं है। शिवबाबा कोई ज्योतिषी है कि विनाश कब होगा, कि 500 करोड़ कब सुधरेंगे। एक हिसाब बताय दिया मोटा-2।

जिज्ञासु:- मिनी मधुबन कैसे बनेगा?

बाबा:- और जो मिनी मधुबन बने है वो कैसे बने हैं? क्या भीख माँग के बने हैं? चंदा करके बने हैं क्या?

जिज्ञासु ने कुछ कहा।

बाबा:-कोई हो या न हो हम खड़े हो जाते हैं। दूसरों के होने न होने से क्या होता है? मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे।

Time: 45.27-46.35
Student: Baba, when will a minimadhuban be established here?
Baba: An astrologer has certainly not come here. Is Shivbaba an astrologer to predict when destruction will take place? When will the 5 billion [souls] reform? He has just given a calculation in broad terms.
Student: How will a minimadhuban be established?
Baba: How were the other minimadhubans established? Were they established by seeking alms? Were they established by collecting money? (Student said something.) Whether someone

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

supports or not, we should stand. What happens if others don't support? If you wish to achieve a position, you should end your existness.

समय:- 46.38 से 47.50

जिज्ञासु:- बाबा, अभी गुप्ता भाई ने कहा है संगठन को एक सूत्र बनाने के लिए वो कौनसा कारण है।...

बाबा:- जो एक सूत्र बनाता है वो पहले खुद आगे बढ़े कि मैं एक सुत्र हूँ। जो खुद आगे बढ़ेगा उसको मरना पड़ेगा। देहअभिमान से मरेंगे तो संगठन बनेगा। हमारा देहअभिमान भी चालू रहे, और हम संगठन भी बना लें ये संभव हो सकता है क्या?

जिज्ञासु:- कभी नहीं। लेकिन ये ... समझ में आ रहा है?

बाबा:- कुछ करने की दरकार नहीं है। न दूसरों के ऊपर बोलने की दरकार है। अंतर मन को आलोड़न करने की बात है। ये कोई अकेले गोरखपुर की बात थोड़े ही है? और शहर नहीं हैं जहाँ ये समस्या है कि मिनी मधुबन कैसे बने, और कौन बनाये, और कौन आगे कदम बढ़ाये?

Time: 46.38-47.50
Student: Baba, now Gupta bhai asked: what is the method to unite a gathering? ...
Baba: The one who takes the initiative should first move ahead thinking that I am the crucial link. The one who moves ahead himself will have to die. If you kill your body consciousness, then the gathering will be formed. Can it be possible to remain body conscious as well as make a gathering?
Student: Not at all. So, did he understand…?
Baba: There is no need to do anything. Nor is there any need to point a finger at others. It is about churning the mind within. It is not about Gorakhpur alone. Are there not other cities that are facing this problem that how a minimadhuban should be established, who should establish it and who will step ahead?

समय:- 47.51 से 50.44

जिज्ञासु:-बाबा, शास्त्रों में आया है कि कृष्ण का जन्म द्वापर में हुआ।

बाबा:- शास्त्रों में लिखा है, हाँ।

जिज्ञासु:- लेकिन ज्ञान में बताया कि सतयुग में कृष्ण का जन्म होता है।

बाबा:- वो बाबा ने बताया।

जिज्ञासु:- हाँ, तो वासुदेव क्या है और जो सूप में कृष्ण को रात में ले गया, इसका क्या रहस्य है?

बाबा:- कृष्ण जो है वो जन्म हुआ द्वापर में। और बाबा ने बताया कृष्ण का जन्म द्वापर में नहीं हुआ। कृष्ण का जन्म सतयुग आदि में हुआ। तो अब प्रश्न क्या है?

जिज्ञासु:- वासुदेव कौन है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा:- वसु कहते हैं धन संपत्ति को और देव माने देने वाला। क्या? धन संपत्ति को देने वाला हुआ वसुदेव। और वसुदेव का पुत्र हुआ वासुदेव। जैसे ब्रह्मा का पुत्र ब्राह्मण, एक मात्रा बढ़ गई। विष्णु का पुत्र वैष्णव, शिव का पुत्र शैव। फॉलोअर या बच्चे के अर्थ में एक मात्रा बढ़ जाती है। तो ऐसे ही यहाँ भी है। वसुदेव कौन है? धन संपत्ति देने वाला देव कौन है? बाप। वो धन संपत्ति देने वाला है, ज्ञान की धन संपत्ति देने वाला वसुदेव है। और वसुदेव का पुत्र कौन है? वासुदेव माने कृष्ण। पैदा कब होता है, प्रत्यक्ष कब होता है? जब द्वापर के अंत की शूटिंग होती है।

Time: 47.51-50.44
Student: Baba, it is mentioned in the scriptures that Krishna was born in the Copper Age.
Baba: It is mentioned in the scriptures. Yes.
Student: But it is said in knowledge that Krishna is born in the Golden Age.
Baba: Baba told [you] that.
Student: Yes. So, who is Vasudev; and Krishna was taken in a basket at night; what is its secret?
Baba: Krishna was born in the Copper Age. And Baba has said that Krishna was not born in the Copper Age. Krishna was born in the beginning of the Golden Age. So, what is your question?
Student: Who is Vasudev?
Baba: *Vasu* means wealth and property, and *dev* means giver. What? The one who gives wealth and property is Vasudev. And the son of Vasudev is Vaasudev. For example, the son of Brahma is Brahmin, one syllable increased. Vishnu's son is Vaishnav; Shiva's son is Shaiv. In the sense of a *follower* or child, one syllable increases. So, similar is the case here as well. Who is Vasudev? Who is *dev*, the giver of wealth and property? The Father. He is the giver of wealth and property; He is Vasudev who gives the wealth and property of knowledge. And who is the son of Vasudev? Vaasudev means Krishna. When is he born? When is he revealed? It is when the shooting of the end of the Copper Age takes place.

द्वापर के अंत का शूटिंग ब्राह्मणों की दुनियां में कब हुई? 98 में। तो कारागार से प्रत्यक्ष हो जाता है। अखबारों में, टी.वी. में, रेडियो में प्रत्यक्षता हो जाती है। लेकिन वो संपूर्ण जन्म नहीं है। ब्राह्मणों का जन्म एक होता है या ब्राह्मणों का दो जन्म होता है? दूसरा जन्म तब कहें जब तीनों मूर्तियों का पक्का ज्ञान बुद्धि में बैठ जाये। वो कृष्ण वाली आत्मा ये समझ ले कि मैं गीता का भगवान नहीं हूँ। गीता का भगवान असली कौन है ये बात बुद्धि में बैठनी चाहिए। तो ये गाँठ अभी भी पड़ी हुई है। इसलिए कृष्ण का जन्म असली तब कहेंगे जब ये गाँठ खुल जाये।

When did the shooting of the end of the Copper Age take place in the world of Brahmins? In 98; so, he is revealed from the jail. Revelation takes place through newspapers, *TV*, *radio*. But that is not a complete birth. Do Brahmins have one birth or two births? The second birth will be said to take place when the firm knowledge of all the three personalties sits in the intellect. That soul of Krishna should realize: I am not God of the Gita. The fact that who is the [actual] God of the Gita should sit in the intellect. So, this knot is still intact. This is why the actual birth of Krishna will be said to have taken place when this knot is opened.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय:- 50.45 से 50.59

जिज्ञासु:- बाबा, 2018 में गाँठ खुल जायेगी?

बाबा:- 2018 में संगमयुगी स्वर्णिम संगमयुग में सतयुग शुरू होगा या नहीं होगा?

जिज्ञासु:- हो जायेगा।

बाबा:- हाँ।

Time: 50.45-50.59
Student: Baba, will the knot be opened in 2018?
Baba: Will the Golden Age in the Golden Confluence Age begin in 2018 or not?
Student: it will.
Baba: Yes. ... (to be continued.)

Part-8

समय:- 50.59 से 57.12

जिज्ञासु:- बाबा, माया सभ्यता की भविष्यवाणी थी आज तक न्यूज़ पे कि 21 दिसम्बर 2012 अंतिम दिन है कलियुग का, 22 दिसम्बर 2012 पहला दिन है सतयुग का। पूरा कैसेट उसका बना-2 के दिखा रहे हैं इधर, उधर।

बाबा:- हाँ, जो भी न्यूज़ सुना रहे हैं, जो भी बातें बताय रहे हैं उसमें जो सच्चाई है उसमें सच्चा अर्थ बाप बतायेगा या मनुष्य जो बताय रहे हैं उनको पता है?

जिज्ञासु:- जो लिख करके चले गये हैं।

बाबा:- जो लिख करके चले गये?

जिज्ञासु:- हाँ।

बाबा:- वो लिख करके थोड़े ही रखा है, वो तो उन्होंने अपने ज्योतिष शास्त्र से बताया। ये अफ्रीका का एक बड़ा विद्वान, बहुत मनीषी जो बहुत ज्यादा वहाँ प्रसिद्ध है वो ज्योतिषी ने बताया है अपनी गणना करके कि उसके बाद उसकी तवारीख में तारीख ही नहीं आती। नई दुनियां शुरुआत हो जावेगी। संवत एक-2 शुरू हो जायेगा। लेकिन ऐसा कुछ होना नहीं है। उसका कारण ये है...

Time: 50.59-57.12
Student: It was reported about the prophecy of Mayan civilization in Aaj Tak News, that 21st December 2012 is the last day of the Iron Age; 22nd December, 2012 is the first day of the Golden Age; they are showing the entire cassette here and there .
Baba: The news that they are narrating, the topics that they are narrating; will the Father tell the true meaning of the truth that it contains or do the human beings who are narrating [the news] know [the truth]?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Those who wrote and departed.
Baba: Those who wrote and departed? That was not written; they narrated on the basis of astrology. A great scholar, a thinker, a famous astrologer of Africa said this on the basis of his calculations; he does not foresee any date after that date. The new world will begin. The year 1.1.1 will begin. But no such thing is going to happen. The reason for it is...

और भी बातें लिखी हैं। प्रकृति जो है, पृथ्वी जो है वो अपनी धुरी चेंज कर देगी। वो भी बात नहीं है। पृथ्वी के भी दो रुप हैं। एक चैतन्य पृथ्वी और एक जड़ पृथ्वी। तो पहले जड़ का परिवर्तन होगा या पहले चैतन्य आत्मा का परिवर्तन होगा? चैतन्य आत्मा का परिवर्तन होगा। वो पृथ्वी जो विपरीत हो गई है वो प्रकृति दोनों हाथों में झाड़ू लेकर के खड़ी हुई है, आक्रमक बनी हुई है, महाकाली का रुप धारण किये हुये है। वो अपना रुप चेंज कर देगी। वो चैतन्य की बात है। जड़ पृथ्वी की बात नहीं है। जड़ पृथ्वी का तो अटल निश्चय रहना चाहिए कि बाबा ने मुरली में जो बोल दिया है 100 वर्ष संगमयुग है। तो 100 वर्ष से पहले इस दुनियां का विनाश नहीं हो सकता। 98 में पाण्डवों को देश निकाला मिला। बाप ने अव्यक्त बापदादा ने घोषणा कर दी- बापदादा अव्यक्त हो गये दुनियां वालों की नजरों से और बच्चों के सामने प्रत्यक्ष हो गये। तो बापदादा की जो लिस्ट है, नम्बर है वो पाण्डवों के परिवार के बीच है या नहीं है? हैं। बापदादा गुप्त हो गये माना पाण्डव भी गुप्त होने हैं, हो रहे हैं वो गुप्त पार्टधारी हैं। वो 98 से गुप्त वास शुरू होता है। रामायण में 14 साल बताया है।

They have written other things as well. The nature, the Earth will change its axis. That is not true either. There are two forms of the Earth as well. One is a living Earth and the other is a non-living Earth. So, will the non-living Earth be transformed first or will the living soul be transformed first? The living soul will be transformed [first]. That Earth, which has become an opponent, that nature is standing with brooms in both hands; she is in the form of an attacker; she has taken the form of Mahakali. She will change her form. That is about the living [Earth]. It is not about the non-living Earth. As regards the non-living Earth, you should have unshakeable faith that Baba has said in the murli that the Confluence Age lasts for a hundred years. So, this world cannot be destroyed before the completion of 100 years. The Pandavas were banished in 98. The Father, Avyakt Bapdada declared: Bapdada vanished from the eyes of the people of the world and was revealed in front of the children. So, is the *list*, is the number of Bapdada included among the family of Pandavas or not? It is. Bapdada became hidden means the Pandavas will also become hidden; they are becoming hidden; they are hidden actors. That hidding period begins from 98. 14 years have been mentioned in Ramayana.

रामायण है त्रेतायुग का, और महाभारत कौनसे युग का बताते हैं? द्वापरयुग का बताते हैं। तो एक साल उन्होंने कम कर दिया, वो 13 साल मानते हैं। 13 साल का वनवास है, अज्ञातवास उसमें एक साल का जुड़ा हुआ है। वो 13 साल। तो 13, 14 कहो कोई अंतर की खास बात नहीं है। वो 98 के बाद 14 साल जोड़ दिये जायें तो कौनसा वर्ष आता है? 2012 वो अभी गुप्त वास चल रहा है या नहीं चल

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

रहा है? और प्रैक्टिकल में चल रहा है या सिर्फ हवा की बातें हैं? प्रैक्टिकल में चल रहा है। ये 14 साल पूरे होंगे और विनाश ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियां में शुरू हो जावेगा। लड़ाई शुरू हो जावेगी। पृथ्वी अपना धुरी चेंज कर देगी। जो अभी महाकाली-महाकाल के रुप में अपोजिशन में बैठी हुई है वो सपोजिशन में आ जावेगी। जो अभी दक्षिणायण का पार्ट बजा रही है, असुरों का संग दे रही है, असुरों का साथ दे रही है वो ही पृथ्वी माता देवताओं का साथ देगी। ये धुरी में परिवर्तन हो जावेगा। भीष्म पितामह ने कब शरीर छोड़ा था? उत्तरायण में शरीर छोड़ा था या दक्षिणायण में शरीर छोड़ा था? (जिज्ञासुओं ने कहा – उत्तरायण में।) अभी सूर्य भी दक्षिणायण में है। दक्षिण भारत में ज्यादा चक्कर लगा रहा है या उत्तर भारत में ज्यादा चक्कर लगा रहा है? तो उत्तरायण में आना है। सूर्य को भी उत्तरायण में आना है और पृथ्वी की धुरी को भी चेंज होना है। ऐसे नहीं कि 2012 में सारी पृथ्वी खलास हो जावेगी। दुनियांवी बातों पर दुनियावी मनुष्यों पर, टी.वी. के ऊपर, अखबारों के ऊपर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। लट्टू नहीं हो जाना चाहिए। बाबा की बातों पर अटल विश्वास होना चाहिए। और इतना अटल विश्वास होना चाहिए अगर कुछ पाना है तो, जो कहा है मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे। बच्चा बच्चा नहीं, बाप बाप नहीं, पत्नी पत्नी नहीं, पति पति नहीं, धन संपत्ति धन संपत्ति नहीं, कोई का आसरा नहीं। एक शिवबाबा दूसरा न कोई।

Ramayana pertains to the Silver Age and Mahabharata pertains to which age? It is said to pertain to the Copper Age. So, they reduced one year. They believe it to be 13 years. There is 13 years of forest life (*vanvaas*); one year of staying hidden (*agyaatvaas*) is added to it. Those are 13 years; it does not matter much whether it is 13or 14 years. If you add 14 years to 98, then which year comes? 2012. So is that period of staying hidden going on now or not? And is it going on in practice or is it just hearsay? It is going on in practice. These 14 years will be completed and the destruction will begin in the Confluence Age world of Brahmins. The war will begin. The Earth will change its axis. The one who is sitting in *opposition* with Mahakal in the form of Mahakali will start supporting [him]. The one who is playing a part of *dakshinaayan*[14] now, the one who is staying in the company of the demons, the one who is supporting the demons, that very mother Earth will support the deities. This change in the axis will take place. When did Bhishma Pitamah leave his body? Did he leave the body in *uttaraayan*[15] or in *dakshinaayan*? (Students: *uttaraayan*.) The Sun is also in *dakshinaayan* now. Is He touring more in south India or in north India? So he has to become *uttaraayan*. The Sun has to become *uttaraayan* and the Earth also has to change its axis. It is not that the entire Earth will perish in 2012. You should not believe in the worldly topics, the worldly people, *TV*, newspapers. You should not be influenced [by them]. You should have unshakeable faith in Baba's versions. And you should have such an unshakeable faith … If you wish to achieve something... For which it is said: if you wish to achieve a position, you should end your existence. My child is not my child; my father is not my

[14] The Sun shining over the southern hemisphere
[15] The Sun shining over the northern hemisphere

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

father; my wife is not my wife; my husband is not my husband; my wealth and property is not my wealth and property; I don't have anybody's support. One Shivbaba and no one else.

समय:- 57.12 से 57.39

जिज्ञासु:- इसका मतलब क्या है बाबा, दाना खाक में मिलकर गुले गुल्जार होता है?

बाबा:- हाँ जी। अब खाक होने का टाइम आ गया। ऐसे नहीं विनाश कब होगा? दुनियां कब सुधरेगी? अरे दुनियां सुधरे या न सुधरे हम तो सुधर सकते हैं। हम अपने को तो चेंज कर सकते हैं। दूसरा कोई चेंज नहीं होता है तो न हो।

Time: 57.12-57.39
Student: Baba, does it mean: the seed mixes with the soil and forms a garden of flowers?
Baba: Yes, now the time to mix with the soil (to shed body consciousness) has come. You should not [think:] when will destruction take place? When will the world reform? *Arey*, whether the world reforms or not, we can certainly reform, can't we? We can at least *change* ourselves. If any other person does not *change*, let him not change.

समय:- 57.39 से 01.00.26

जिज्ञासु:- बाबा कहते हैं कि वो निराकार है। उसको कान नहीं हैं कैसे सुनता है? मुख नहीं है कैसे बोलता है?

बाबा:- अभी भी ये प्रश्न रह गया आपको?

जिज्ञासु:- पाँव नहीं हैं तो कैसे चलता है? ... हम तो समझ रहे हैं वो साकार में आया है हर चीज करते हुये भी अभोक्ता है ...?

बाबा:- माना अभी तुम्हें अभोक्ता नहीं दिखाई पड रहा है? जब 16 हजार के साथ में रहेगा, साथ में सोयेगा तब दिखाई पड़ेगा? कहते हैं 500 करोड का विनाश कब होगा? 500 करोड़ कब सुधरेंगे? अरे, ये इंतजार करना है क्या? लालना के पाँव पालना में ही दिखाई पड़ जाते हैं। ऐसी आँखें बनाना है। दोश दृष्टि और गुण ग्राहक दृष्टि; प्राप्ति करने वाली कौनसी दृष्टि बनेगी? गुण ग्राहक। दोश दृष्टि वाले तो साक्षात भगवान आ जाये उसमें भी दोश देखेंगे। उसमें गुण नहीं दिखाई पडेंगे।

Time: 57.39-01.00.26
Student: Baba, people say that He does not have ears, yet how does He listen? He does not have a mouth, yet how does He speak?
Baba: Do you still have this doubt?
Student: He does not have legs, yet how does He walk? ... I have understood that He has come in a corporeal form; despite doing everything, He is *abhoktaa*[16] ...

[16] The one who does not enjoy pleasures

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: It means that are you unable to see him as an *abhoktaa* now? Will you see Him [as an *abhoktaa*] when He lives [and] sleeps with the 16000? [You] say: when will the 5 billion [souls] be destroyed? When will the 5 billion [souls] reform? *Arey*, should you wait for this? The future of a child can be estimated from his activities as a toddler. You have to develop such vision. Eyes that see defects and eyes that see virtues; which kind of eyes will achieve attainments? The eyes that see virtues. The eyes that see defect will see defect even in God Himself if He comes in the visible form. They won't be able to see virtues in Him.

जिज्ञासु:-जब एक सुधरेगा तभी सब सुधरेंगे।

बाबा:- तब तक इंतजार करें? उस एक को सुधारने की जिम्मेवारी किसकी है? जन्म देने वालों की जिम्मेवारी है या जन्म लेने वालों की जिम्मेवारी है? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ, तो फिर ये प्रश्न खतम करो। जब हमें पता पड़ गया कि हम राधा-कृष्ण जैसी आत्माओं को जन्म देने वाले हैं, हम रचयिता हैं, तो हमें ये देखना है कि एक सुधरेगा तो हम सुधरेंगे? उस बच्चे को सुधारने का प्रयत्न करना है। योगबल की ताकत देनी है। अमृतवेले बैठ करके हम धूनी रमा दें। वो तो भक्तिमार्ग में ऐसे ही चिल्लाते रहते हैं। वो चिल्लाते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। अरे, दूसरा कौन दान दे तुम खुद बैठ जाओ ना। ये कौन चिल्लाते हैं? अरे, दान देने के लिए कौन चिल्लाते हैं? भंगी, चाण्डाल। तो हमें दूसरों से कहना है तुम दान दो? दूसरों के देने की अपेक्षा करनी है या देने लग पड़ना है? अभी तो देने लग पड़ने के समय है।

Student: Everyone will reform only when one reforms.
Baba: Should we wait till then? Who is responsible to reform that 'one'? Is it the responsibility of those who give birth or is it the responsibility of those who are born? So, end this question. When we have come to know: we are the ones who give birth to souls like Radha and Krishna, we are creators, so, should we see that we will reform when that 'one' reforms? We have to make effort to reform that child. We have to give [him] the power of yoga. We should sit in intense meditation at *amritvela*. They simply keep shouting in the path of *bhakti*. They shout: if you give donation, the eclipse will fade out. *Arey*, why will someone else give donation? Do sit yourself [to give donation]. Who shout like this? *Arey*, who shout to seek donation? The *bhangis*[17], *caandaals*[18] (members of so-called lowermost castes among Hindus). So, should we tell the others: Give donation? Should we expect others to give or should we start giving? Now it is the time to start giving. (Concluded.) (Remaining part of this discussion continued in VCD 932.)

[17] sweepers
[18] those who cremate corpses

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info